Collage Name -: Shakuntalam Institute of Teacher's Education.

Paper - C1

B.Ed. 1st year (19-21) Unit - 5 Date - 12/06/20

By - Seema Kumari

* व्यक्तित्व (personality) -:

Introduction -: मानव एक बुद्धिमान एवं विचारवान वाला प्राणी है। एक व्यक्ति में जब शारीरिक सुन्दरता वेष-भूषा, कार्य करने की क्षमता तथा अच्छी विचार पाई जाती है तो उसे आकर्षक व्यक्तित्व के रूप में देखा जाता है।

परन्तु यदि किसी व्यक्ति में इन सभी बातों का अभाव पाया जाता है तो उसका आकर्षण कम हो जाता है, चूँकि वर्तमान समय में व्यक्तित्व को आकर्षण बनाने के लिए शिक्षा के माध्यम से कई कार्यक्रम एवं संस्थाओं द्वारा कार्य किया जा रहा है। अतः व्यक्तित्व मानव को समाज में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है जिससे राष्ट्र, समाज और राज्य विकास के पथ पर अग्रसर हो सके।

* व्यक्तित्व का अर्थ - (Meaning of personality) -:

'व्यक्तित्व' शब्द अंग्रेजी के पर्सनेल्टी (Personality) का पर्याय है। जो यूनानी भाषा के 'पर्सोना' शब्द से उत्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ है - "मुखौटा" (Mask)।

उस समय व्यक्तित्व का अर्थ व्यक्ति के बाह्य गुणों से लगाया जाता था। परन्तु वर्तमान में शिक्षा मनोवैज्ञानिकों ने इसके कार्य एवं स्वरूप में परिवर्तन करते हुए इसे अच्छे ढंग से परिभाषित किया है।

इसप्रकार व्यक्तित्व का सामान्यतः अर्थ है कि व्यक्ति के आंतरिक, शारीरिक

Scanned with CamScanner

और मानसिक गुणों के साथ साथ उसके शारीरिक गुणों का भी समावेश हो जाता। व्यक्तित्व एक व्यक्ति के समस्त मानसिक एवं शारीरिक गुणों का ऐसा गतिशील संगठन है, जो वातावरण के साथ उस व्यक्ति का समायोजन निर्धारित करता है।

* व्यक्तित्व की परिभाषा :-

* गिलफोर्ड के अनुसार :- "व्यक्तित्व गुणों का समन्वित रूप है।"

* वुडवर्थ के अनुसार :- "व्यक्ति के व्यवहार की एक समग्र विशेषता ही व्यक्तित्व है।"

* मार्टन के अनुसार :- "व्यक्तित्व व्यक्ति के जन्मजात तथा अर्जित स्वभाव, मूल प्रवृत्तियों, भावनाओं तथा इच्छाओं आदि का समुदाय है।"

* व्यक्तित्व की विशेषताएँ :-

(1) व्यक्ति में सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है आत्म-चेतना की विशेषता जिसके कारण मानव को सर्वोच्च स्थान प्रदान किया गया है और उसके व्यक्तित्व को स्वीकार किया गया है।

मृत्युपर्यंत तक चलते रहता है।

(iii) व्यक्ति समाज के अन्य व्यक्तियों के संपर्क में आकर क्रिया और अंतः क्रिया करता है। जिसके फलस्वरूप उसके व्यक्तित्व का विकास होता है।

(iv) निर्देशित लक्ष्य की प्राप्ति व्यक्तित्व की महत्वपूर्ण विशेषता है।

(v) अच्छे व्यक्तित्व के लिए शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य का होना आवश्यक है।

* व्यक्तित्व के प्रकार :-

- → (1) शरीर रचना प्रकार।
- → (2) समाजशास्त्रीय प्रकार।
- → (3) मनोवैज्ञानिक प्रकार।

(1) शरीर रचना प्रकार :- जैसा व्यक्ति और शारीरिक रचना में एक-दूसरे से भिन्न-भिन्न दिखते जैसे - पतला-दुबला, बड़े-छोटे सिर वाले, चौड़ी छाती वाला, लम्बा या गोल मुँह वाला और हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला इत्यादि के साथ-साथ खिलाड़ी वर्ग भी आ जाता है।

शरीर रचना

- ↓ शक्तिहीन
- ↓ खिलाड़ी
- ↓ नाटा/लम्ब

2) समाज शास्त्रीय प्रकार :-

- (1) सैद्धांतिक ।
- (2) आर्थिक ।
- (3) सामाजिक ।
- (4) राजनैतिक ।
- (5) धार्मिक ।
- (6) कलात्मक ।

(3) मनोवैज्ञानिक प्रकार :- इसमें व्यक्तित्व के दो पहलू होते हैं —

- (1) अंतर्मुखी
- (2) बहिर्मुखी

(1) अंतर्मुखी व्यक्तित्व :-

इसके लक्षण, स्वभाव आदि अभिवृत्तियाँ और अन्य बातें बाह्य रूप दिखाई नहीं देते हैं अतः इस प्रकार के व्यक्ति का विकास आंतरिक रूप से होता है। इस प्रकार के व्यक्ति अपने आप में कल्पना में जीवन व्यतीत करता है। वे संकोची होने के कारण अपने विचारों

Scanned with CamScanner

को स्पष्ट रूप में व्यक्त नहीं कर पाते हैं अतः इस व्यक्तित्व के अंतर्गत आने वाले व्यक्ति ~~मनुष्य~~ दार्शनिक और विचारक भी होते है।

2) बहिर्मुखी :-

बहिर्मुखी स्वभाव वाले व्यक्ति का विचार बाह्य संरचना को प्रकट करता है वे अपने भावनाओं, विचारो को स्पष्ट रूप से व्यक्त कर सकते है वे समाज के भौतिक एवं सामाजिक लक्षणों से युक्त होते है। वैसे व्यक्ति बाह्य कार्यो में अधिक रुचि रखते है तथा अधिकांश व्यक्ति सामाजिक कार्य करने वाले होते है।

* व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करने वाले कारक :-

- (i) वंशानुक्रम का प्रभाव।
- (ii) जैविक कारकों का प्रभाव।
- (iii) शारीरिक रचना का प्रभाव।
- (iv) दैनिक प्रवृतियों का प्रभाव।
- (v) मानसिक योग्यता का प्रभाव।
- (vi) विशिष्ट रुचि का प्रभाव।
- (vii) भौतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक वातावरण का प्रभाव।

DATE / /20
PAGE

निष्कर्ष :- इसप्रकार हम कह सकते है कि व्यक्तित्व किसी व्यक्ति का समाज में स्थान पद-प्रतिष्ठा और उसके स्वभावों को दर्शाता है। यह व्यक्ति का एक समायोजित संकलन है जो व्यक्ति के लिए सामाजिक व्यवहारपन का मार्ग प्रशस्त करता है।

Scanned with CamScanner